पशुओ का मुँह व खुर रोग: डॉ विवेक

डॉ विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन वैज्ञानिक महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र चौकमाफी पीपीगंज गोरखपुर

खुर और मुँह की बीमारी पशुओ की एक मुख्य संक्रामक तथा घातक रोग है जो क्लौवन फूट (फटे हुए खुर) वाले पशुओ जैसे गाय, भैस, भेड़ एवं सुअर को प्रभावित करती है। जिसके कारण पशु की मृत्यु तो नही होती लेकिन रोग ग्रसित पशु लगभग एक महीने तक कार्य नही कर सकता और दुग्ध उत्पादन क्षमता में भारी गिरावट आ जाती है पशु के ठीक हो जाने के बाद भी उसका स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन पहले की भांति ठीक नही हो पाता है। भारत में यह रोग स्थानिक है तथा इस रोग से प्रतिवर्ष पशुपालकों को बहुत हानि होती है। संकर नस्ल वाले मवेशियों में इस रोग के प्रकोप की बहुत अधिक संभावना होती है।

इस रोग का विषाणु अन्य विषाणुओ में सबसे छोटा होता है तथा कई रूपों में पाया जाता है। यह बीमारी मुख्य रूप से ओ. ए. सी. एशिया 1, सैट 1, सैट 2 एवं सैट 3 नामक विषाणुओ द्वारा होती हैयह अलग अलग प्रकार के विषाणु की तरह व्यवहार करते है अर्थात एक प्रकार के विषाणु से उत्पन्न रोग ठीक होने के पश्चात दुसरे विषाणु द्वारा रोग थोड़े समय के अंतर पर पुनः हो सकता है। रोग का विषाणु शरीर के अन्दर श्वास नली द्वारा प्रवेश करता है कभी-कभी पशु आहार के साथ भी यह शरीर में प्रवेश करता है। रोग प्रत्यक्ष संपर्क या अप्रत्यक्ष रूप से संक्रमित पानी, घास और चरागाह इत्यादि के माध्यम से फैलता है।

रोग के लक्षण: विषाणु का पशु के शरीर में प्रवेश करने के 3 से 7 दिनों के अन्दर ही रोग के लक्षण प्रतीत होने लगते है। मुँह व खुर के रोग का प्रथम लक्षण पशु को तेज बुखार (104-105^0 फा०) आता है और पशु सुस्त हो जाता है। कुछ समय पश्चात (2 से 3 दिन) के अन्दर पशु के मुँह से लार टपकना आरम्भ हो जाता है जो लगातार चलता रहता है। इसके साथ-साथ मुँह के अन्य भागों अर्थात मसूढ़ों होंठ जीभ की उपरी सतह पर पानी वाले फफोले बनने आरम्भ हो जाते है। छाले फूटने के पश्चात पशु मुँह मरना आरम्भ कर देता है छाले ठीक होने के पश्चात पशु उठने बैठने का प्रयास करता है

इस रोग के अन्य लक्षण पैरो पर होते है। पैरो पर लक्षण या तो मुँह के लक्षणों के साथ-साथ या कुछ समय बाद दिखाई देते है। फफोले खुरो पर या खुरो के बीच की खली जगह पर होते है, जिसके कारण पशु लगड़ा कर चलता है। कुछ समय बाद ये फफोले अपने आप फूट जाते है या तो उनके स्थान पर लाल-लाल क्षेत्र रह जाते है। खुरो पर हुये फफोले मिट्टी, घास, व काँटों के संपर्क में आने पर जल्दी ही फूट जाते है। जिन पशुओ को ये बीमारी होती है उसको ठीक होने में तीन से चार सप्ताह का समय लग जाता है। अगर पशु की अच्छी तरह से देखभाल नही की गयी तो खुरो में कीड़े पड़ने की सम्भावना रहती है। मुँह के अतिरिक्त फफोले थानों पर भी पाये जाते है। बड़े पशुओ में मुँह व खुर रोग से मृत्यु दर न के बराबर होती है, परन्तु बछड़े बछडियों में अधिक है।

रोग का उपचार: खुरपका एवं मुँहपका एक विषाणु जनित रोग है अतः इसके लिए कोई विशेष दवा या एंटीबायोटिक्स नहीं है, जो कि इस विषाणु पर असर कर सके लेकिन सहायक उपचार उपलब्ध है मुँह को बोरिक एसिड व फिटकरी के घोल से दिन में 4-5 बार धोना चाहिए। फिनायल का घोल खुरो पर डालना चाहिए। अगर कीड़े पद गये हो तो उन्हें निकलना चाहिए। थानों के घाव को पोटेशियम परमेगनेट के घोल से साफ करे तथा घाव पर कोई भी एंटीसेप्टिक क्रीम लगाये। पैरों में घावों के लिए एक आम और सस्ती ड्रेसिंग 5:1 के अनुपात में कोल-तार और कॉपर सल्फेट का मिश्रण है। इसके साथ-साथ रोगी पशु को एंटीबायोटिक का टीका एवं खनिज मिश्रण भी देना चाहिए।

रोग से बचाव: पशुओ को रोग से बचाव के लिए पोलिवैलेंट टिश्यू कल्चर वैक्सीन का टीकाकरण बछड़े को 20 मिली एवं व्यस्क को 40 मिली की दर से 4 से 6 महीने की उम्र में एवं बूस्टर टीका 4 महीने बाद दिया जाता है उसके बाद प्रतिवर्ष टीकाकरण करना चाहिए। बीमार पशुओं का अलगाव और पृथक्करण कर तुरंत पशु चिकित्सक को सूचित किया जाना चाहिए। स्वस्थ्य पशु को रोगी पशु के संपर्क में नही आने देना चाहिए। ब्लीचिंग पाउडर या फिनोल के साथ पशु शेड का कीटाणु-शोधन करना चाहिए।